दभ्यद्रवत्तमभ्यवदत्कोऽसीति वायुर्वा अहमस्मीत्यब्रवीन्मातरिश्वा वा अहमस्मीति॥८॥

वायुदेव ब्रह्म के पास दौड़ कर गये। ब्रह्म ने पूछा ''तुम कौन हो?'' वायु ने उत्तर दिया ''मैं ही वायु हूँ। मैं ही मातरिश्वा हूँ।''

ॐ

पारस-मणि लोहे को सोना बना देती है; परन्तु वह उसको पारस-मणि नहीं बना सकती, लेकिन सद्गुरु अपने शिष्य को अपने समान ही बना डालता है; अतः वह निश्चय ही अनुपम है। **स्वामी शिवानन्द**

ब्रह्मचर्य-साधना :

गृहस्थों के लिए ब्रह्मचर्य

परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

यह बात पूर्णतः असन्दिग्ध है कि ब्रह्मचर्यमय जीवन यशस्कर तथा आश्चर्यकर है। फिर भी, गार्हस्थ्य-जीवन में संयमपूर्ण जीवन आध्यात्मिक विकास के लिए उतना ही लाभकर तथा सहायक होता है । दोनों के अपने-अपने लाभ हैं। आपको इन दोनों में से किसी भी एक पथ पर चलने के लिए बड़े मनोबल की आवश्यकता है।

वर्णाश्रम-धर्म तो आजकल वस्तुतः लुप्त हो चला है। प्रत्येक व्यक्ति वैश्य अथवा बनिया बन गया है और वैध तथा अवैध किसी भी तरह से, याचना, ऋण अथवा स्तैन्य से धन-संचय के लोभ में संलग्न है। प्रायः सभी ब्राह्मण तथा क्षत्रिय वैश्य बन चले हैं। आजकल सच्चे ब्राह्मण तथा क्षत्रिय नहीं रह गये हैं। वे येन-केन-प्रकारेण रुपया चाहते हैं। वे अपने वर्ण अथवा आश्रम-धर्म का पालन करने का प्रयास नहीं करते हैं। मनुष्य के पतन का यही मूलभूत कारण है। यदि गृहस्थ अपने आश्रम के कर्तव्यों को अति-नियमनिष्ठा से निभाते हैं, यदि वह आदर्श गृहस्थ हैं, तो उन्हें संन्यास लेने की आवश्यकता नहीं है। गृहस्थ अपने कर्तव्य-पालन में विफल हो रहे हैं। यही कारण है कि वर्तमान समय में संन्यासियों की संख्या में वृद्धि हो रही है। एक आदर्श गृहस्थ का जीवन उतना ही कठिन तथा कठोर है, जितना कि एक आदर्श संन्यासी का जीवन। प्रवृत्ति-मार्ग अथवा कर्मयोग का मार्ग उतना ही कठिन तथा कठोर है, जितना कि निवृत्ति-मार्ग अथवा संन्यास का पथ है।

यदि व्यक्ति अपने गार्हस्थ्य-जीवन में ब्रह्मचर्य-मय जीवन यापन करता है तथा सन्तान के लिए ही नियमित समय पर सम्भोग करता है, तो वह स्वस्थ, मेधावी, बलवान्, सुरूप तथा आत्म-त्यागी सन्तान का प्रजनन कर सकता है। प्राचीन भारत के तपस्वी तथा ऋषि जन विवाहित होने पर इस उत्कृष्ट नियम का बड़ी ही सावधानीपूर्वक अनुसरण किया करते थे तथा अपने व्यवहार और उपदेश द्वारा शिक्षा दिया करते थे कि गृहस्थ होते हुए भी किस प्रकार ब्रह्मचारी का जीवन यापन किया जाये। हमारे पूर्वज मातृभूमि की रक्षा तथा राष्ट्र के अन्य उत्कर्षकारी कार्यों के लिए सन्तान उत्पन्न करने में निस्सन्देह ऋषियों का अनुसरण करते थे। जिन्होंने श्रीमद्भागवत का स्वाध्याय किया है, वे मनु-पुत्री देवहूति तथा उनके पति कर्दम ऋषि के जीवन से परिचित होंगे। कर्दम ऋषि ने देवहूति को पुत्र-रत्न देने के लिए उनके साथ एक बार सहवास किया, जिससे उनसे सांख्य-दर्शन के प्रवर्तक कपिल मुनि का जन्म हुआ। पराशर ने वेदान्त-दर्शन के प्रवर्तक श्री व्यास को जन्म देने के लिए मत्स्यगन्धा के साथ सहवास किया।

प्राचीन काल के महर्षि जन विवाहित होते थे; किन्तु वे रागमय तथा कामुक जीवन यापन नहीं करते थे। उनका गार्हस्थ्य-जीवन धर्मपरायण जीवन ही होता

था। यदि आप उनका अक्षरशः अनुकरण नहीं कर सकते, तो आपको उनके जीवन को मर्यादा के रूप में, एक अनुकरणीय आदर्श के रूप में अपने सम्मुख रखना चाहिए तथा सन्मार्ग पर चलना चाहिए। गृहस्थाश्रम एक कामुक तथा लम्पट जीवन नहीं है। यह निःस्वार्थ सेवा का, शुद्ध तथा सरल धर्म का, दानशीलता का, साधुता का, स्वावलम्बन का तथा लोक-हित और लोक-संग्रह का अति-नियमनिष्ठ जीवन है। यदि आप ऐसा जीवन व्यतीत कर सकते हैं, तो गृहस्थी का जीवन उतना ही अच्छा है जितना कि संन्यासी का जीवन।

विवाहित जीवन में ब्रह्मचर्य क्या है?

सुव्यवस्थित, संयत विवाहित जीवन यापन करें। गृहस्थ के रूप में भी आप गार्हस्थ्य-धर्म के सिद्धान्तों में लगे रह कर आत्म-संयम तथा भगवान् की नियमित उपासना द्वारा ब्रह्मचारी बने रह सकते हैं। विवाह आपको आपके आध्यात्मिक पथ में किसी भी रूप में अधोगामी न बनाये। आपको अध्यात्म-अग्नि को सदा प्रज्वलित रखना चाहिए। आपको अपनी धर्मपत्नी को भी आध्यात्मिक जीवन की वास्तविक महिमा को समझाना चाहिए। यदि आप दोनों कुछ काल तक ब्रह्मचर्य का पालन करें और तत्पश्चात् असंयम से बचे रहें, तो आपकी धर्मपत्नी हृष्ट-पुष्ट सन्तान का प्रजनन करेगी जो देश के गौरव होंगे। सुरक्षित रखी हुई शक्ति का उच्चतर आध्यात्मिक उद्देश्यों के लिए उपयोग किया जा सकता है। बारम्बार के प्रसव की रोकथाम से आपकी धर्मपत्नी का स्वास्थ्य भी सुरक्षित रहेगा।

गृहस्थ-आश्रम में ब्रह्मचर्य का अर्थ मैथुन पर पूर्ण संयम रखना है। गृहस्थों को यौन-सुख के विचार के बिना, केवल वंश-परम्परा बनाये रखने हेतु माह में एक बार उचित समय पर अपनी पत्नी के साथ सहवास करने की अनुमति है। यह भी ब्रह्मचर्य-व्रत है। वे भी ब्रह्मचारिणी हैं।

गृहस्थों को अपनी पत्नियों को भी उपवास रखने तथा जप, ध्यान और उन सभी अन्य साधनाओं को करने के लिए कहना चाहिए, जिनसे ब्रह्मचर्य-पालन में उन्हें सहायता प्राप्त होती है। उन्हें अपनी धर्मपत्नियों को भी गीता, उपनिषद्, भागवत तथा रामायण के स्वाध्याय तथा आहार-सम्बन्धी नियमों के सम्बन्ध में प्रशिक्षित करना चाहिए।

यदि आप ब्रह्मचर्य पालन करना चाहते हैं, तो आप अपनी पत्नी को अपनी भगिनी समझें तथा अनुभव करें। पति-पत्नी की भावना को नष्ट कर डालें तथा भ्राता और भगिनी की भावना विकसित करें। आप दोनों ही शुद्ध तथा प्रगाढ़ प्रेम विकसित करेंगे; क्योंकि कामुकता की अशुद्धि दूर हो जायेगी। अपनी पत्नी के साथ सदा आध्यात्मिक विषयों की ही चर्चा करें। उनसे महाभारत तथा भागवत के आख्यान कहें। अवकाश के दिनों में उनके पास बैठें तथा धार्मिक पुस्तकें पढ़ कर सुनायें। शनैः-शनैः उनका मन परिवर्तित हो जायेगा। उन्हें आध्यात्मिक साधनाओं में रुचि तथा प्रसन्नता होगी। यदि आप सांसारिक कष्टों से मुक्त होना तथा शाश्वत आत्मानन्द भोगना चाहते हैं, तो इसे कार्यान्वित करें।

आजकल के युवक बाहर जाते समय अपनी पत्नियों को सदा अपने साथ ले जाने में पाश्चात्यों का अनुकरण करते हैं। इस व्यवहार से पुरुषों में स्त्रियों की संगति में सदा-सर्वदा रहने का दृढ़ स्वभाव पड़ जाता

है; फिर अल्प काल के वियोग से उन्हें अत्यधिक पीड़ा तथा व्यथा होती है। कई लोगों को पत्नी की मृत्यु से बड़ा आघात लगता है। इसके अतिरिक्त उनके लिए एक माह के ब्रह्मचर्य-व्रत का संकल्प लेना अतीव कठिन हो जाता है। हे अभागे दुर्बल लोगो, आध्यात्मिक दिवालियो! अपनी जीवन-संगिनियों से जितना अधिक हो सके, दूर रहने का प्रयास कीजिए। उनके साथ कम बातचीत कीजिए। गम्भीर रहिए। उनके साथ हास-परिहास न कीजिए। सायंकाल को भ्रमणार्थ अकेले जाइए। आपके बुद्धिमान् पूर्वजों ने क्या किया? पाश्चात्यों में जो अच्छाइयाँ हैं, उन्हें ही आत्मसात् करें। लोक-व्यवहार, जीवन-पद्धति, पहनावा तथा खान-पान का निकृष्ट अनुकरण अनिष्टिकारक है।

जब पत्नी माँ बन जाती है

जब आपके एक पुत्र उत्पन्न हो जाता है, तो पत्नी आपकी माता बन जाती है; क्योंकि आप स्वयं पुत्र के रूप में उत्पन्न हुए हैं। पुत्र अपने पिता की शक्ति मात्र है। आप अपनी मानसिक अभिवृत्ति को बदल दें। अपनी पत्नी की जगज्जननी के रूप में सेवा करें। आध्यात्मिक साधना आरम्भ करें। काम-वासना को नष्ट कर डालें। आप अपनी पत्नी को काली अथवा जगज्जननी मान कर, प्रातःकाल बिस्तर से उठते ही उसके चरण-स्पर्श करें तथा उसको साष्टांग प्रणाम करें। आप इस कार्य में लज्जा का अनुभव न करें। इस व्यवहार से आपके मन से 'पत्नी'-भाव दूर हो जायेगा। यदि आप शारीरिक रूप से साष्टांग प्रणाम न कर सकें, तो कम-से-कम मानसिक रूप से ही करें।

सन्तानोत्पत्ति के पश्चात् व्यक्ति को कामुकता त्याग देनी चाहिए। उसे ब्रह्मचर्य पालन करना चाहिए। उसे अपनी पत्नी को अपनी माता मानना चाहिए। यदि एक बार इस विचार को मन में प्रमुख स्थान दे दिया, तो वह बच्चे की मृत्यु हो जाने पर भी अपने मानसिक दृष्टिकोण को कैसे बदल सकता है और अपनी पत्नी के विषय में कामुक दृष्टि से सोच सकता है। यह गृहस्थ के लिए एक महान् साधना है। यदि सन्तान न उत्पन्न हो, तो द्वितीय पत्नी के साथ विवाह करना उचित नहीं है। तब पति तथा पत्नी को ब्रह्मचर्य पालन करते हुए आध्यात्मिक पथ पर संयुक्त रूप से आगे बढ़ना चाहिए।

आध्यात्मिक सहभागिता का जीवन यापन

मनु का कथन हैह्रह्न''प्रथम सन्तान धर्म से तथा शेष सन्तानें काम से उत्पन्न होती हैं। विषय-सुख के लिए रतिक्रिया न्यायसंगत नहीं है।'' जो पिपासु साधक आत्म-साक्षात्कार के मार्ग के पथिक हैं और जो चालीस वर्ष से अधिक आयु वाले गृहस्थ हैं, उन्हें अपने पति अथवा पत्नी के साथ सम्भोग करना त्याग देना चाहिए; क्योंकि यौन-संसर्ग सभी असद् भावनाओं को पुनर्जीवित कर देता है और उन्हें जीवन का नया पट्टा प्रदान करता है। विवाह को अब एक सुव्यवस्थित धार्मिक गृहस्थ जीवन यापन द्वारा अपनी प्रकृति के पूर्ण दिव्यीकरण तथा जीवन-लक्ष्यह्रह्न भगवद्-साक्षात्कारह्रह्नकी प्राप्ति के लिए दो आत्माओं का ईश्वर-विहित सम्बन्ध समझना चाहिए। यदि पति तथा पत्नी आशु आध्यात्मिक प्रगति तथा इस जीवन में ही आत्म-साक्षात्कार करना चाहते हैं, तो उन्हें पूर्ण शारीरिक ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए।

आध्यात्मिक मार्ग में अधूरे प्रयास को कोई स्थान नहीं है।

क्या आप चालीस वर्ष से अधिक वय के गृहस्थ हैं? तब तो आपको अब पूर्ण ब्रह्मचारी बन जाना चाहिए। आपकी पत्नी को भी एकादशी के दिन व्रत रखना चाहिए। अब ऐसा न कहेंहह्ह''स्वामी जी महाराज, मैं क्या कर सकता हूँ। मैं एक गृहस्थ हूँ।'' यह झूठा बहाना है। आप एक कामुक गृहस्थ के रूप में कब तक रहना चाहते हैं? क्या जीवनावसानपर्यन्त रहेंगे ? क्या जीवन का खाने, सोने तथा प्रजनन करने से अधिक उदात्त कोई लक्ष्य नहीं है? क्या आप आत्मा के शाश्वत आनन्द का उपभोग करना नहीं चाहते हैं? आप सांसारिक सुखों का पर्याप्त आनन्द ले चुके हैं तथा गृहस्थ-जीवन की अवस्था को पार कर चुके हैं। यदि आप युवक होते, तो मैं आपको छोड़ सकता था; किन्तु अब नहीं। अब संसार में रहते हुए वानप्रस्थ तथा मानसिक संन्यास की अवस्था के लिए तैयार हो जायें। सर्वप्रथम अपने हृदय को रँगें। यह निस्सन्देह एक उदात्त जीवन होगा। अपने को तैयार कर लें। मन को अनुशासित करें।

वास्तविक संन्यास मानसिक अनासक्ति है। वास्तविक संन्यास वासनाओं, 'मैं-पन', 'मेरा-पन', स्वार्थपरता तथा सन्तान, शरीर, पत्नी और सम्पत्ति के मोह का विनाश है। आपको हिमालय की गुहाओं में जाने की आवश्यकता नहीं है। मन की उपर्युक्त स्थिति को प्राप्त करें। अपने परिवार तथा बच्चों के साथ संसार में शान्ति तथा समृद्धि में रहें। संसार में रहें; किन्तु संसार से बाहर रहें। सांसारिकता त्याग दें। यही सच्चा संन्यास है। मैं वास्तव में यही चाहता हूँ। तब आप राजाओं के राजा बन जायेंगे। मैं कई वर्षों से खूब चिल्ला-चिल्ला कर इस प्रकार कह रहा हूँ; किन्तु बहुत ही कम व्यक्ति मेरे उपदेशों का अनुसरण करते हैं।

प्रवृत्ति-मार्ग का अनुसरण करने वाले व्यक्ति के लिए साध्वी पत्नी एक मूल्यवान् रत्न तथा प्रभु की असीम कृपा का मूर्त रूप है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सामंजस्य दम्पति के लिए प्रभु की दुर्लभ देन है। प्रत्येक जीवन-संगी को दूसरे का सभी अर्थों में सच्चा साथी होना चाहिए। गृहस्थाश्रम ईश्वरत्व में विकास की निश्रयणी का सुरक्षित डण्डा है। शास्त्रविहित नियम का पालन करें तथा अनन्त आनन्द का उपभोग करें।

सच्चा मिलन आध्यात्मिक आधार पर ही स्थापित हो सकता है। आपमें से दोनों ही उभयनिष्ठ जीवन-लक्ष्यहह्हभगवद्-साक्षात्कार को प्राप्त करने के आकांक्षी बनें। जब आपके चतुर्दिक् रहने वाले दम्पति भौतिकता की तथा अपनी वैयक्तिक हैसियत से एक-दूसरे को नीचे घसीटने की होड़ में लगे हैं, आप दोनों को आध्यात्मिक साधना में शीघ्र उन्नति करने की स्पर्धा करनी चाहिए। यह क्या ही अनूठी स्पर्धा है! जीवन-संगी के साथ ऐसी प्रतिस्पर्धा क्या ही ईश्वरानुग्रह है! **(अनूदित)**

शिष्य को गुरु की ईश्वर-रूप में सेवा करनी चाहिए, जो कि सर्वेश्वर को प्रसन्न करने तथा उनकी कृपा का अधिकारी बनने का अचूक उपाय है। **स्वामी शिवानन्द**

प्रभु-चरणों में हमारा भाव कैसा हो!

परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज

आपमें से अधिकांश भगवान् राम के, जानकी, लक्ष्मण और हनुमान् के साथ के चित्रों से परिचित हैं। इन चित्रों में हनुमान् जी सदैव श्री राम के चरणों में बैठे हुए दिखाये गये होते हैंह्न‘‘मैं भगवान् के चरणों में हूँ। मैं प्रभु-चरणों का दास उनके चरणों में बैठा हुआ हूँ।’’

और यद्यपि हमने उनके द्वारा लंका में की गयी अनेकों अत्यन्त शौर्यपूर्ण लीलाओं के सम्बन्ध में सुना हुआ है, अनेकों शक्तिशाली असुरों को विजित करके उन्हें मृत्यु की गोद में सुला देने इत्यादि की उनकी असंख्य असाधारण घटनाओं के सम्बन्ध में हम जानते ही हैं, तो भी हम देखते हैं कि भगवान् श्री राम की उपस्थिति में वह सदा ही अपने दोनों हाथ बाँधे हुए, शिर झुका कर नत-मस्तक बैठे हुए हैं; मानो कातर वाणी से कहने को आतुर होंह्न‘‘हे प्रभु! मेरी नहीं, केवल आप ही की इच्छा-पूर्ति हो!’’

हनुमान् जी द्वारा अभिव्यक्त जीवन का यह रूप हमारे लिए एक सुशिक्षा है। क्योंकि भगवान् की उपस्थिति में केवल उपासना की ही सम्भावना है और केवल विनम्रता के द्वारा ही किसी की उपासना की जा सकती है। अहं शोभा नहीं देता। अपने स्वाग्रह को, अपनी स्वार्थ-भावना अथवा अहंकार को भगवान् की उपस्थिति में व्यक्त करना अत्यन्त अशोभनीय है।

अपने मानस-पटल पर, अपनी आन्तरिक दृष्टि के सम्मुख सदैव हनुमान् जी का यह चित्र अंकित किये रहें। यदि ऐसा महान् व्यक्तित्व, इतने शक्तिशाली, इतने विकट, इतने दुर्जेय, इतनी शूरवीरता-निर्भीकता और बल से सम्पन्न! यदि वह इतने विनीत सेवक हो सकते हैं, सदैव दास्य भाव से भगवान् की इच्छा पूर्ण करने को तत्पर, उनकी आज्ञा का पालन करने को उद्यत, तब फिर हमारा उनसे कितना अधिक गहन भाव, भगवान् की सेवा में रहने का होना चाहिए? क्योंकि हम हनुमान् जी की तुलना में हैं ही क्या?

अपने जीवन के इस पहलू पर विशेष रूप से चिन्तन करें! हम सब, भगवान् के सर्वत्र व्यापक होने में विश्वास रखते हैंह्न‘‘आप सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ हैं।’’ हमारा विश्वास शुष्क विश्वास नहीं होना चाहिए। मात्र बौद्धिक स्तर पर केवल अपने धर्मग्रन्थों तथा ऋषि-मुनियों और द्रष्टाओं की अनुभूतियों के आधार पर उनके अनुमोदन से ही हम कहते हैंह्न‘‘हम सब नाम-रूपों में आपका ही दर्शन करें।’’ क्या इन शब्दों को कहते समय हम उनके भाव को अपने हृदय में अनुभव करते हैं या कि केवल जिह्वा से उच्चारण मात्र ही कर देते हैं। यदि हम हृदय से अनुभव करके यह कहते हैं, यदि यह हमारा विश्वास है और सच्चा यथार्थ विश्वास है, हमारा यह यदि निश्चयात्मक विश्वास है, तब क्या उनकी उपस्थिति में हमारा अहंवादी होना, स्वाग्रही, स्वार्थी, उग्र स्वभाव वाला होना अथवा झगड़ालू या लड़ाका होना सम्भव होगा? क्या तब ऐसा होना सम्भव हो सकता है?

यदि भगवान् की सर्वव्यापकता में हमारा विश्वास, एक जीवन्त विश्वास है, यह हमारे लिए एक ऐसा सिद्धान्त बन चुका है जिस पर हम अपना जीवन आधारित किये हुए हैं, तब इस विश्वास के द्वारा, इस सिद्धान्त के द्वारा सुरक्षित, हम उस अन्तर्निष्ठ विद्यमानता में कभी भी उनके प्रति कुछ भी अशोभनीय का चिन्तन तक करने का स्वप्न में भी नहीं सोचेंगे। उनके प्रति, जो शोभनीय न हो, ऐसे एक शब्द का भी उच्चारण करने की कल्पना नहीं करेंगे; उनकी दिव्य उपस्थिति में अशोभनीय किसी भी कार्य को करने का विचार तक मन में नहीं लायेंगे। बल्कि सहज स्वाभाविक रूप से ही, अपने-आप, बिना किसी प्रयास के ही आपका जीवन दिव्य बन जायेगा। आपका जीवन सद्‌गुण, विनम्रता, सादगी, सेवा-परायणता और भीतर-बाहर से ईश्वरीय सान्निध्य में स्थित होने की भावना से परिपूर्ण हो जायेगा। आपका जीवन एक आदर्श, उदात्त, भला तथा आपको अचिन्तनीय शान्ति प्रदान करने वाला जीवन हो जायेगा।

अत: हम अपने उज्ज्वल अतीत में से अपने सन्त-मनीषियों द्वारा अनुभूत इन महान् सत्यों पर मनन करें! हमारे दैनिक जीवन में, चलते-फिरते और व्यवहार करते हुए इन सत्यों का हम पर कैसा अद्‌भुत प्रभाव हो सकता है? यह धन्यता प्राप्त कर लेने की कुंजी बन सकते हैं! हमारी भक्ति-भावना से, हमारे अनुशासनपूर्ण, समर्पित आध्यात्मिक जीवन से सम्बन्धित सभी अशोभनीय कार्यों के विरुद्ध यह एक अचूक आश्वासन (गारंटी) बन सकते हैं, और हमें विश्वस्त कर सकते हैं कि हमारे आदर्शों के विरुद्ध कुछ भी, कभी अशोभनीय कार्य हमसे नहीं होगा।

यह सत्य उपेक्षा कर देने के लिए नहीं हैं, असावधानीपूर्वक छोड़ देने के लिए नहीं हैं, उदासीनता दिखाने या तुच्छ समझ लेने के लिए नहीं हैं। यह सत्य तो गहराई से सोचने-विचारने, आत्मसात् करने और अपने नित्य के जीवन में उतार लेने के लिए हैं; यह सत्य तो प्रत्येक पग पर, प्रत्येक पल, सदा-सर्वदा जान लेने, समझ लेने के लिए और ध्यान देने के लिए हैं। तब यह ऐसे सत्य बन जायेंगे जो हमें मुक्त कर दें, जो हमारा रूपान्तरण कर दें, जो हमारे जीवन को दिव्य बना दें। और यही तो हम चाहते हैं। इसी के लिए हम कार्यरत हैं, प्रयत्नशील हैं, इसी के लिए हम जीवन जी रहे हैं। और यह सत्य हमारे जीवन को उदात्त बना सकते हैं, हमारे जीवन के अर्थपूर्ण, जीने के योग्य बना सकते हैं। हमारी साधना को ईश्वरानुभूति प्रदान करके लाभान्वित कर सकते हैं। इसमें किंचित् भी संशय नहीं है।

(अनुवादिका : श्रीमती सुधा भारद्वाज)

धर्म एक है। ईश्वर एक है। धर्म की वास्तविक भाषा प्रेम की भाषा है। मनुष्य से प्रेम करना और उसकी सेवा करना तथा उस परम दिव्य की पूजा और खोज में जीवन-अर्पण कर देनाह्लह्लयही धर्म का पथ है। संक्षेप में, धर्म का हृदय यही दो बातें हैंह्लह्लसेवा और प्रेम। **स्वामी चिदानन्द**

उपनिषद् १

परम पावन श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज

संक्रान्ति-काल

संहिता एवं ब्राह्मण-ग्रन्थों का मुख्य स्वर पवित्रता तथा विधि-विधानों का है। इनके मध्य में यत्र-तत्र धार्मिक भावना एवं चिन्तन के आनन्द का उभार आता है, तो कभी-कभी विश्व-व्यापक परम शक्तिह्लह्लविराट्ह्लह्लके आध्यात्मिक दर्शन भी होते हैं।

वैदिक ऋषियों के विचारों के अन्तःप्रवाह में विश्व के पदार्थों में आध्यात्मिक दर्शन का अर्थ निहित था। 'समग्र विश्व परम पुरुष का यज्ञ है'ह्लह्लचिन्तन के इस चरम बिन्दु तक यज्ञ-सम्बन्धी उनकी धारणा का विस्तार हुआ। फिर भी समाज के उच्च वर्णोंह्लह्लब्राह्मण एवं क्षत्रियों के सामान्य जीवन में भौतिक यज्ञों द्वारा देवों (जिनसे सम्बन्धित स्तोत्र संहिताओं में उपलब्ध हैं) को प्रसन्न करने की इच्छा अधिक महत्ता प्राप्त करती रही।

यज्ञ तथा ऋत और सत्य के नियमों के साथ-साथ संसार पर भी अधिकाधिक चिन्तन किया गया। संसार-सम्बन्धी धारणा का मुख्यार्थ थाह्लह्लकर्म-सिद्धान्त के फल-स्वरूप जन्म ग्रहण करने के कारण प्राप्त सांसारिक अस्तित्व। विचारशील समुदाय को जन्म-जन्मान्तर के चक्र से मुक्ति प्राप्त करने की आवश्यकता प्रतीत होने लगी; क्योंकि यह समझा जाने लगा कि मानव स्व-जीवन में एक नियम में आबद्ध होता है तथा वह उसका उल्लंघन भी करता है। इसी कारण वह पुनर्जन्म को प्राप्त होता है। ब्राह्मण एवं संहिताओं की मूल विचारधारा परिपक्व हो कर नियम भंग करने के कारण उत्पन्न कामनाओं से मुक्ति पाने की आवश्यकता में रूपान्तरित हुई। इसी आवश्यकता को आरण्यकों में तप या आत्म-संयम की संज्ञा दी गयी। अरण्य में एकान्त-जीवन व्यतीत करने वाले तपस्वियों को संहिताओं के स्तोत्रकारों तथा ब्राह्मण-ग्रन्थों के याजकों से अधिक सम्मान प्राप्त होने लगा। वेदों के यज्ञों को बाह्य स्थूल आहुतियों के रूप में देखने की अपेक्षा उन्हें अन्तःध्यान की क्रिया के रूप में देखने की वृत्ति को सबल भूमिका प्राप्त हुई। वेदों के प्रारम्भिक भागों में वर्णित आनुष्ठानिक धर्मचर्या का प्रवाह उपनिषदों में सृष्टि के रहस्यमय चिन्तन की ओर मुड़ गया। उस समय यह भी ज्ञात हुआ कि परिणाम अथवा फल-प्राप्त्यर्थ भौतिक यज्ञ की अपेक्षा अन्तर्यज्ञ अधिक सशक्त है।

सत्य की खोज

अरण्यवासी महात्माओं ने यज्ञों की अपेक्षा ध्यान-प्रक्रिया में अधिक समय देना प्रारम्भ कर दिया और अपनी आध्यात्मिक शक्ति के बल पर इतर जनों से अपनी विशिष्ट महत्ता सिद्ध की। वे अपने को कर्मकाण्डी सिद्धान्तों की रूढ़िगत औपचारिकताओं

से असम्बद्ध रखते हुए तप अथवा आत्म-संयम द्वारा प्रकृति पर प्रभुत्व प्राप्त करने का यत्न करने लगे। इस प्रकार उन्हें संसार की प्रत्येक वस्तु का ज्ञान एक-साथ प्राप्त करने की शक्ति मिली। वे सर्वज्ञ बन गये और उन्होंने बिना किसी अवरोध के ब्रह्माण्ड के विविध क्षेत्रों में आवागमन करने की क्षमता प्राप्त कर ली। कतिपय ऋषियों की आध्यात्मिक शक्ति अंशतः ईश्वर की शक्ति के समान बन गयी और वे स्वेच्छानुसार मात्र दृष्टिपात करके वस्तुओं की सृष्टि, पालन या नाश करने में समर्थ बन गये। उन्होंने ध्यान-प्रक्रिया से ही ब्रह्माण्ड के विविध रहस्यों का उद्घाटन किया और परम तत्त्व-रूप जगदीश्वर परमात्मा के अनुकूल बन सके। मृत्यु पर विजय प्राप्त करके उन्होंने जन्म-मरण से मुक्ति पायी। वे सर्वजयी बने। उपनिषदों के शब्दों में वे सम्पूर्ण विश्व के स्वामी थे अथवा स्वयं ही विश्व-रूप थे। आध्यात्मिक साक्षात्कार का ऐसा महान् गौरव था! इन ऋषियों के दिव्य अनुभव ही आरण्यकों एवं उपनिषदों की विषय-सामग्री बने। **(अनूदित)**

सूचना

द डिवाइन लाइफ सोसायटी, चंडीगढ़
शिवानन्द आश्रम,चंडीगढ़ की द्वितीय वर्षगाँठ
७ व ८ मार्च २०१०

द डिवाइन लाइफ सोसायटी, चंडीगढ़ शाखा शिवानन्द आश्रम, चंडीगढ़ की द्वितीय वर्षगाँठ ७ व ८ मार्च २०१० को मनाने जा रही है। इस अवसर पर क्षेत्रीय आध्यात्मिक सम्मेलन का भी आयोजन प्रस्तावित है। शिवानन्द आश्रम, ऋषिकेश से वरिष्ठ सन्त-महात्मा अपनी उपस्थिति से इस अवसर पर शोभा बढ़ायेंगे। इस समारोह में सम्मिलित होने के लिए सभी भक्तों को हार्दिक रूप से आमन्त्रित किया जाता है।

पंजीकरण व जानकारी हेतु कृपया सम्पर्क करेंह्ह

श्री एफ. लाल. कन्सल, अध्यक्ष, मो. नं. ०९८१४०१५२३७
डा. रमणीक शर्मा, सचिव, मो. नं. ०९८१४१०५१५४

पता : शिवानन्द आश्रम, द डिवाइन लाइफ सोसायटी, चंडीगढ़ शाखा
प्लाट नं. २, सेक्टर २९ ए, चंडीगढ़ह्ह१६००३०
दूरभाष : ०१७२-२६३९३२२

द डिवाइन लाइफ सोसायटी

बच्चों के लिए दिव्य जीवन :

नीति के पाठ ४

परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

ईमानदार बनो

छोटी-छोटी बातों में भी ईमानदार बनो। ईमानदारी सर्वोत्तम नीति है। ईमानदारी मूलभूत गुण है। ईमानदार मनुष्य पर सभी लोग विश्वास करते हैं। उसका सब आदर करते हैं। वह जीवन में विजयी होता है। वह शीघ्र तरक्की करता है। वह अपने उद्योग-व्यापार का तुरन्त विस्तार कर सकता है। वह प्रसिद्ध हो जाता है।

ईमानदार मनुष्य पर ईश्वर कृपा करता है। अधिकारी लोग भी ईमानदार मनुष्य को पसन्द करते हैं। ईमानदार रहोगे, तो तुम्हारा चित्त शुद्ध रहेगा। सुख की नींद आयेगी और स्वास्थ्य ठीक रहेगा। परलोक में स्वर्ग के द्वार तुम्हारे लिए खुले रहेंगे।

रिश्वत न लो। यह बेईमानी है, पाप है। इस कुकृत्य का बुरा फल भोगना पड़ता है। अपनी आय के अन्दर निर्वाह करो। उतना ही पाँव फैलाओ, जितनी लम्बी चादर हो। अपने खर्चे को आमदनी से अधिक न होने दो। सादा जीवन जिओ। तब अधिक धन की अपेक्षा नहीं रहेगी। धन उधार लेना नहीं पड़ेगा। रिश्वत लेने का प्रलोभन नहीं रहेगा।

लक्ष्य पर दृढ़ रहो

जल्दी सो कर जल्दी उठने से मनुष्य स्वस्थ, समृद्ध और बुद्धिमान् बनता है। वचन देने में जल्दबाजी न करो, पर दिया हुआ वचन पूरा करने में विलम्ब न करो। वक्त का एक टाँका नौ टाँकों से अच्छा है। 'तब पछताये होत क्या जब चिड़ियाँ चुग गयीं खेत।' एकता में बल है।

एक हँसी हजार रोगों का उपचार है। दान के बछड़े के दाँत नहीं गिने जाते। चीजें जैसी दीखती हैं, असल में वह वैसी नहीं हैं। अहंकार वायुवेग से आता है, चींटी की चाल से जाता है। उपदेश देना आसान है, उस पर अमल करना कठिन।

रोग का इलाज करने से बेहतर है, उससे बचाव करना। जो-कुछ भी है, वह ईश्वर है। सभी चमकने वाली वस्तुएँ सोना नहीं होतीं। बिना सेवा के मेवा नहीं। ईश्वर में श्रद्धा रखो और भला काम किये जाओ। समय सबसे मूल्यवान् है।

प्रोफेसर बनो

वकील या पुलिस आफिसर न बनो। प्रतिदिन असंख्य बार झूठ बोलना पड़ेगा। रोज कई गलत काम करने पड़ेंगे। इससे आत्मा का हनन होगा।

डाक्टर बनो या प्रोफेसर बनो या किसान बनो। प्रोफेसर बनोगे, तो खूब अवकाश मिलेगा। शान्त और धर्ममय जीवन जी सकोगे। प्रतिदिन जप, कीर्तन और ध्यान के लिए पर्याप्त समय मिलेगा।

अपनी खेती का ध्यान रखो। उससे खूब धन मिलेगा। इसमें स्वावलम्बन है। डाक्टरों का पेशा उत्तम है, लेकिन मोटी फीस न लेना। गरीबों का उपचार निःशुल्क करो। **(अनुवादक : श्री त्रि. न. आत्रेय)**

बाल-स्तम्भ :

बुराई का बदला

स्वामी रामराज्यम्

पुरानी घटना है।

कलकत्ता में एक सेठ ने अपने चौकीदार रामशरण को उस पर चोरी का झूठा अभियोग लगा कर नौकरी से निकाल दिया। रामशरण ने उन्हें लाख समझाने की कोशिश की कि वह निर्दोष है, लेकिन सेठ नहीं समझे। उन्होंने एक दूसरा चौकीदार रख लिया। उसका नाम कालीचरण था। उन दिनों चौकीदार दिन के समय दुकानों पर काम करते थे, आधी रात तक उधार दिये गये माल के रुपये वसूलते थे और रात के समय अपनी-अपनी दुकानों के आगे सो जाया करते थे।

एक रात की बात है। कालीचरण रुपये वसूल करके अपनी दूकान को लौट रहा था। उसके पास बीस हजार रुपयों की थैली थी। रास्ते में लुटेरों ने उसे पकड़ लिया और उससे थैली छीन ली। कालीचरण चिल्लाने लगा। संयोग से रामशरण उसी रास्ते से आ रहा था। उसने कालीचरण की आवाज सुनी तो उसे बचाने के लिए दौड़ा। कालीचरण तक पहुँचते-पहुँचते रामशरण को थोड़ी देर हो गयी। इसी बीच इशारों से बात करके लुटेरों ने कालीचरण को उस धन में से कुछ हिस्सा लेने के लिए राजी कर लिया। कालीचरण तो चुप हो गया लेकिन रामशरण शोर मचाने लगा। लुटेरों ने उससे कहाह्नह्न''तुम चुप हो जाओ। कालीचरण के साथ-साथ हम तुम्हें भी कुछ हिस्सा दे देंगे।''

रामशरण गुस्से से बोलाह्नह्न''तुम मेरे सामने मेरे मालिक का नुकसान करोगे?''

अब कालीचरण धीमी आवाज में बोलाह्नह्न ''अब सेठ तेरे मालिक कहाँ रहे? उन्होंने ही तो तुझे निकाल दिया था।''

''तो क्या हुआ?'' रामशरण बोलाह्नह्न''उन्होंने मेरे साथ बुराई की, तो क्या मैं भी उनके साथ बुराई करूँ?''

इस बीच कुछ और लोग भी आ गये। उन्होंने लुटेरों से थैली छीन ली। लुटेरे भाग गये। कालीचरण ने सोचा कि रामशरण सेठ से मेरी शिकायत कर देगा। वह भी भाग गया।

रामशरण रुपयों की थैली ले कर सेठ के पास पहुँचा और उनकी कोठी का फाटक खटखटाने लगा। रात के एक बज रहे थे। रामशरण की आवाज सुन कर सेठ को आश्चर्य हुआ। वह अन्दर से बोलेह्नह्न''यह कोई आने का टाइम है?''

''आप फाटक तो खोलिए'' रामशरण ने कहा।

सेठ ने फाटक खोला। रामशरण ने उन्हें रुपयों की थैली थमायी और पूरी-पूरी बात बता दी। सेठ को ऐसा लगा कि वह सपना देख रहे हैंह्नह्नजिसे उन्होंने नौकरी से निकाल दिया था, उसी ने उनके साथ भलाई की!

सेठ की आँखों में आँसू आ गये। वह उसे अपनी बाहों में ले लेने के लिए आगे बढ़े। रामशरण एक कदम पीछे हट गया और बोलाह्नह्न''सेठ जी, मैं वही रामशरण चोर हूँ।''

सेठ रोने लगे। बोलेह्नह्न''रामशरण, मुझे माफ कर दो। मैं गुनाहगार हूँ।''

रामशरण को सेठ अपनी कोठी में लिवा ले गये और बहुत देर तक उसके पास बैठे-बैठे आँसू बहाते रहे।

रामशरण ने कहाह्नह्न''सेठ जी, मैं विद्वान् नहीं हूँ लेकिन इतना जानता हूँ कि खुद बुराई नहीं करनी चाहिए और जो बुराई करे उसके साथ भलाई करके उसकी बुराई का बदला चुकाना चाहिए।''

बच्चो, बुराई का बदला चुकाने के इस तरीके को तुम भी अपनाओगे न?

विश्व-प्रार्थना

हे स्नेह और करुणा के आराध्य देव!
तुम्हें नमस्कार है, नमस्कार है।
तुम सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान् और सर्वज्ञ हो।
तुम सच्चिदानन्दघन हो।
तुम सबके अन्तर्वासी हो।

हमें उदारता, समदर्शिता और मन का समत्व प्रदान करो।
श्रद्धा, भक्ति और प्रज्ञा से कृतार्थ करो।
हमें आध्यात्मिक अन्त:शक्ति का वर दो,
जिससे हम वासनाओं का दमन कर मनोजय को प्राप्त हों।
हम अहंकार, काम, लोभ, घृणा, क्रोध और द्वेष से रहित हों।
हमारा हृदय दिव्य गुणों से परिपूरित करो।

हम सब नाम-रूपों में तुम्हारा दर्शन करें।
तुम्हारी अर्चना के ही रूप में इन नाम-रूपों की सेवा करें।
सदा तुम्हारा ही स्मरण करें।
सदा तुम्हारी ही महिमा का गान करें।
तुम्हारा ही कलिकल्मषहारी नाम हमारे अधर-पुट पर हो।
सदा हम तुममें ही निवास करें ।

स्वामी शिवानन्द

पूर्णकुम्भ-समारोह

परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

राशि-चक्र में कुम्भ ग्यारहवीं राशि है। ग्रहों का एक विशिष्ट योग होने पर हरिद्वार, प्रयाग, नासिक तथा उज्जैन में से किसी एक स्थान पर हर बारहवें वर्ष कुम्भमेला लगता है। प्रत्येक दो पूर्णकुम्भों के बीच अर्ध-कुम्भ का मेला लगता है।

पूर्णकुम्भ-समारोह (मेला) बृहस्पति और कुम्भ का योग होने पर हरिद्वार में, बृहस्पति तथा मेष का योग होने पर प्रयाग में, बृहस्पति तथा कर्क का योग होने पर नासिक में एवं बृहस्पति तथा तुला का योग होने पर उज्जैन में आयोजित किया जाता है। समारोह की अवधि में कुछ विशिष्ट तिथियाँ स्नान करने की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण मानी जाती हैं। भारतवर्ष के कोने-कोने से लाखों की संख्या में भक्त गण इस अवसर पर पावन स्नान करने के उद्देश्य से एकत्रित होते हैं।

प्राचीन काल में जन-साधारण के नैतिक तथा आध्यात्मिक उत्थान के लिए कुम्भमेलों का श्रीगणेश किया गया था। तपश्चर्या में रत सन्त, महात्मा, योगी तथा आध्यात्मिक गुरु कुम्भमेले की अवधि में इन स्थानों पर एकत्रित हुआ करते थे तथा गृहस्थों एवं आध्यात्मिक साधकों को आध्यात्मिक ज्ञान का उपदेशामृत वितरित किया करते थे। भक्त गण उनके श्रीचरणों के निकट बैठ कर उनके पावन उपदेश का श्रवण किया करते थे। वहाँ धार्मिक कक्षाएँ संचालित की जाती थीं, प्रवचन-कार्यक्रम आयोजित किये जाते थे तथा योग और मोक्ष के जिज्ञासु साधकों को योग और मोक्ष के रहस्यों में दीक्षित किया जाता था।

पौराणिक परम्परा के अनुसार समुद्र-मन्थन के समय जब असुर अमृत-कलश ले कर भागे, तब कलश से अमृत की बूँदें १२ स्थानों (स्वर्ग के ८ स्थानों तथा पृथ्वी के ४ स्थानों) पर गिरीं। पृथ्वी के ये चार स्थान हरिद्वार, प्रयाग, नासिक तथा उज्जैन ही हैं जहाँ कुम्भमेले आयोजित किये जाते हैं। आध्यात्मिक महत्त्व के विषयों पर विचार-विनिमय करने, आध्यात्मिक अनुभवों का आदान-प्रदान करने तथा गृहस्थों एवं साधकों को आध्यात्मिक ज्ञान प्रदान करने हेतु ऋषि-मुनि एवं महात्मा आदि किसी निश्चित अवधि में, निश्चित स्थान पर एकत्र हो सकें, इस उद्देश्य की पूर्ति में कुम्भमेलों की भूमिका महत्त्वपूर्ण रही है। यदि इन मेलों में आध्यात्मिक शिक्षण को व्यवस्थित रूप दिया जा सके, तो मानवता के लिए ये मेले वरदान सिद्ध होंगे।

कुम्भमेले में सभी प्रकार के लोग पहुँचते हैं; परन्तु उनमें आध्यात्मिक दृष्टि से उन्नत महापुरुष, महामण्डलेश्वर, विद्वज्जन भी पहुँचते हैं जो साधकों का मार्ग-निर्देशन करते हैं। इस अवसर पर एकान्त स्थलों पर, भीड़ से दूर विरक्त महात्माओं तथा त्यागी सन्तों के भी दर्शन प्राप्त हो जाते हैं। साधु-संन्यासियों, योगियों तथा नागा बाबाओं के बीच इन एकान्तवासियों को ढूँढ़ कर उनके दर्शन करने चाहिए।

इनके अमूल्य वचन आपके मार्ग-दर्शक बनेंगे। इनके निर्देश आपका उत्थान करेंगे।

इस पूर्णकुम्भ-समारोह में भाग लेते हुए आपको कुछ लाख की संख्या में जप अवश्य करना चाहिए। इस पावन अवसर पर किये गये जप का प्रभाव अनूठा ही होता है तथा आपको आध्यात्मिक लाभ प्रदान करता है। १५ या ३० दिनों के लिए आप कोई अनुष्ठान भी करें। फल और दूध का आहार लें। गीता, उपनिषद्, रामायण तथा भागवत का स्वाध्याय करें। साधु-सन्तों का सत्संग करें। निरुद्देश्य भ्रमण न करें। मौन-व्रत रखें। इस व्रत से आपका आध्यात्मिक विकास होगा। दानशीलता आपके अनेकानेक पापों को नष्ट करती है; अतः प्रचुर मात्रा में दान करें। कुम्भमेले में भाग लेने से आपको निष्काम कर्मयोग का अनुपम अवसर प्राप्त होता है। इस अवसर को न खोयें। साधु-महात्माओं की सेवा करें। रोगियों की सेवा करें। निष्कपट तथा उत्साही साधकों एवं निःस्वार्थी तथा जिज्ञासु महात्माओं के लिए कुम्भमेला आत्मज्ञान प्राप्त करने तथा प्रदान करने का भी एक सुअवसर है। इस मेले में आज जो-कुछ प्राप्त करते हैं, वह आपकी उस मनःस्थिति पर निर्भर करता है जिसमें रहते हुए आप इसमें भाग लेते हैं।

ईश्वर आपको सुख, शान्ति, परमानन्द, अमरत्व एवं दीर्घकालिक और ठोस साधना करने की क्षमता प्रदान करे!

(अनूदित)

सूचना

महाशिवरात्रि

पवित्र महाशिवरात्रि शिवानन्द आश्रम, शिवानन्दनगर में **१२ फरवरी २०१०** को मनायी जायेगी। श्री विश्वनाथ मन्दिर में दिन में और सारी रात्रि समवेत स्वर में पंचाक्षर-मन्त्र (**'ॐ नमः शिवाय'**) के अखण्ड कीर्तन के अतिरिक्त अभिषेक, सहस्रनामार्चना तथा रुद्र, नमक, चमक, पुरुषसूक्त, नारायणसूक्त और श्रीसूक्त के पाठ के साथ भव्य पूजा की जायेगी। इस व्रत में सम्मिलित होने के विचार से हमें यथेष्ट समय पूर्व अवगत करा कर आने वाले भक्तों का हार्दिक स्वागत है। उन्हें अपने आने की सूचना **'जनरल सेक्रेटरी, द डिवाइन लाइफ सोसायटी, शिवानन्द आश्रम, पो. शिवानन्दनगर २४९ १९२, जिला टिहरी-गढ़वाल, उत्तराखण्ड'** को दे देनी चाहिए। जो स्वयं न सम्मिलित हो सकें, वे **'व्यवस्थापक, मन्दिर डिपार्टमेन्ट, द डिवाइन लाइफ सोसायटी, शिवानन्द आश्रम, पो. शिवानन्दनगर २४९ १९२, टिहरी-गढ़वाल, उत्तराखण्ड'** को अपनी इच्छा से सूचित कर देंगे, तो उनके नाम से भी पूजा की जायेगी।

द डिवाइन लाइफ सोसायटी

शिवरात्रि-महिमा

परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

पार्वतीपति भगवान् शिव को प्रणाम है! ब्रह्म की संहारकारी शक्ति को प्रणाम है! जो शम्भू, शंकर, महादेव, सदाशिव, विश्वनाथ, हर, त्रिपुरारि, गंगाधर, शूलपाणि, नीलकण्ठ, दक्षिणामूर्ति, चन्द्रशेखर, नील-लोहित इत्यादि नामों से जाने जाते हैं, जो अपने भक्तों पर शुभता, अमरत्व और दिव्य ज्ञान की वृष्टि करने वाले हैं, जो प्रलय-काल में ताण्डव नृत्य करते हैं और जो संहारकारी नहीं प्रत्युत पुनरुज्जीवन प्रदाता हैं, उनको हम मौन प्रणाम करते हैं!

महाशिवरात्रि का अर्थ हैह्नह्नभगवान् शिव का ध्यान करने वाली महानिशा। महाशिवरात्रि फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तिथि को (फरवरी-मार्च मास में) पड़ती है।

महाभारत के शान्ति-पर्व में भीष्मपितामह जब शर-शैया पर लेटे हुए धर्मोपदेश कर रहे थे, उस समय वे राजा चित्रभानु को महाशिवरात्रि व्रत करने का उपदेश देते हैं।

एक बार समस्त जम्बूद्वीप पर जब ईक्ष्वाकू वंश के राजा चित्रभानु का राज्य था, तब वह और उनकी पत्नी महाशिवरात्रि का उपवास किये हुए थे। उस समय ऋषि अष्टावक्र उनके राजदरबार में आये।

ऋषि ने प्रश्न कियाह्नह्न''हे राजन्! आपने आज उपवास क्यों किया है?'' तब राजा चित्रभानु ने यह व्रत रखने का कारण बताया। उसको अपने पूर्व-जन्म की स्मृति रहने का वर प्राप्त था।

उसने अष्टावक्र ऋषि से कहाह्नह्न''मैं अपने पूर्व-जन्म में सुस्वर नामक व्याध था। पशु-पक्षियों को मार कर बेचना ही मेरी आय का साधन था। एक दिन मैं शिकार की खोज में वन में भटक रहा था। आखेट करते-करते रात्रि का अन्धकार छा गया। मार्ग न सूझ पाने से घर लौटने में असमर्थ हो, हिंस्र जन्तुओं के आक्रमण के भय से वृक्ष पर चढ़ गया। वह बिल्व का वृक्ष था। मैंने एक मृग का शिकार किया था; किन्तु उसे घर ले जाने का समय नहीं मिला था। अत्यधिक क्षुधा और पिपासा से आक्रान्त होने के कारण मैं रात्रि-भर जागता रहा। यह चिन्ता करते-करते कि मेरी पत्नी और बच्चे मुझे न पा कर किस दशा में भूखे-प्यासे तड़प रहे होंगेह्नह्नमैं फूट-फूट कर रोने लगा और व्याकुलता में वृक्ष के पत्ते तोड़ता रहा। उस बिल्व-वृक्ष के मूल में एक शिवलिंग था। मेरे अश्रु और बेल-पत्र शिवलिंग पर मेरे अनजाने ही गिरते रहे।

''प्रात: हुई। मैं घर पहुँचा और आखेट किया मृग बेचा। परिवार और अपने लिए भोजन का सामान लाया। मैं व्रत खोलने वाला ही था कि एक अज्ञात व्यक्ति आया और मुझसे कुछ खाने के लिए माँगने लगा। मैंने पहले उसे भोजन दिया, फिर स्वयं खाया। अपनी मृत्यु के समय मैंने भगवान् शिव के दो गण देखे। वह दोनों भगवान् द्वारा मेरी जीवात्मा को शिवलोक ले जाने के लिए भेजे गये थे। तब मुझे प्रथम बार महाशिवरात्रि के दिन उपवास करने की महिमा का ज्ञान हुआ, यद्यपि मैंने तो वह उपवास अनजाने में संयोग से ही किया था। मैंने दीर्घ काल तक शिवलोक में रह कर दिव्य आनन्द का उपभोग किया और अब पुन: इस संसार में चित्रभानु के रूप में उत्पन्न हुआ हूँ।''

(अनुवादिका : श्रीमती सुधा भारद्वाज)

समाचार और प्रतिवेदन

मुख्यालय के समाचार

'शिवानन्द होम' द्वारा सेवा

श्री गुरुदेव की अपार कृपा से तथा श्री स्वामी जी महाराज की अनन्त दया से दिव्य जीवन संघ मुख्यालय अपने ही एक अंग 'शिवानन्द होम', जो कि लक्ष्मणझूला के निकट तपोवन में स्थित है, के द्वारा सतत विनम्र सेवा में संलग्न है। यह ऐसे घर-बार से विहीन निर्धन रोगियों को चिकित्सीय सेवा उपलब्ध कराता है जिन्हें भरती हो कर इलाज कराने की आवश्यकता रहती है।

वे चार लोग थे। चारों मित्र गंगा में स्नान करने के लिए फ़िरोजाबाद से आये थे। किन्तु परिस्थितियाँ पल-भर में बदल जाती हैं; क्षण-भर में ही व्यक्ति का जीवन पूरा पलट सकता है। चारों मित्रों में से एक 'कमल भैया' नाम के व्यक्ति का नदी में प्रवेश करते समय पैर फिसल गया और वह भीतर चट्टान से जा टकराया। उसके शिर पर गहरी चोट लगी और वह किसी भी तरह से बाहर निकल नहीं पा रहा था, अन्य तीनों व्यक्ति सहायता और दवाई लाने का बहाना करके वहाँ से ऐसे भाग निकले कि लौटे ही नहीं। घण्टों तक उसकी टाँगें और बाहें ठण्ढे-बरफीले जल में डूबी रहीं। निरन्तर वह भगवान् से प्रार्थना करता रहा, दया की भीख माँगते हुए कि भगवान् उसे भुलायें नहीं! अपनी कृपा-वृष्टि करें! अपनी विद्यमानता दर्शायें! अपनी करुणामयी फुसफुसाहट सुनायें! और देखिए, लगभग पाँच घण्टों बाद (उसके अनुमान से) चार साधु बाबा उसे बचाने के लिए पहुँच गये। अत्यन्त कठिनाई से वे किसी-न-किसी प्रकार उसे किनारे तक ले आने और फिर 'शिवानन्द होम' में भरती कराने में सफल हो गये। जब यहाँ पहुँचा तो वह मानसिक आघात की अवस्था में था। अल्प ऊर्जा (हाइपोथरमिया) के कारण उसके हाथ-पैर संवेदनाहीन हो चुके थे और स्तम्भित हो गये थे। परीक्षण के उपरान्त सही इलाज शुरू हो जाने पर, परमात्मा की कृपा से रोगी की दशा में सुधार हो रहा है।

ॐ श्री सद्गुरुदेवाय नमः! ॐ श्री शंकराचार्याय नमः! ॐ श्री गंगादेव्यै नमः!

''बहुत-सी बातें जीवन में हैं
जो हम समझ नहीं पाते,
पर भगवान् के निर्णय पर हमेंह्न
विश्वास होना ही चाहिए;
और 'उनके' निर्देशन में चलना चाहिए।
और भी जिन पर 'उनकी' कृपा है
सब 'उनकी' सुरक्षा में निश्चिन्त रह सकते हैं।
क्योंकि 'विश्वास और प्रार्थना के पंखों' पर
'वह' सुरक्षित यात्रा का वायदा करते हैं।''

(हैलेन स्टेनर राइस)

''भूखे को भोजन दें! नग्न को वस्त्र दें! रोगियों की सेवा करें! यही दिव्य जीवन है।'' **स्वामी शिवानन्द**

परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज की सांस्कृतिक यात्रा

मलेशिया दिव्य जीवन संघ के अध्यक्ष, परम पूज्य श्री स्वामी गुहभक्तानन्द जी महाराज के स्नेहपूर्ण आमन्त्रण के प्रतिभाव में, परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज ने दिनांक ७ नवम्बर से दिनांक १९ नवम्बर की अवधि में मलेशिया की मुलाकात ली। स्वामी जी महाराज दिनांक ७ नवम्बर को कोला लाम्पुर पहुँचे। उसी सन्ध्या को स्वामी जी महाराज ने 'तडिका शिवानन्द' के स्नातक-समारोह में उपस्थिति दी। स्वामी जी महाराज ने 'शिक्षा का महत्त्व' विषयक, अभिभावकों तथा छात्रों को प्रवचन दिया। आधिक्य में, स्वामी जी महाराज ने १२० छात्रों को स्नातक-प्रमाणपत्र प्रदान किये। पश्चात् स्वामी जी महाराज ने युवा-कार्यक्रम में उपस्थिति दे कर, युवा-विभाग द्वारा भजन-प्रस्तुति होने के बाद, 'जीवन में छात्रों का साफल्य' विषय पर, सम्बोधन किया। स्वामी जी महाराज ने दिव्य जीवन संघ की 'जोहोरे बारु' उपशाखा से दिनांक ८ को भेंट की तथा 'भगवद् गीता का सन्देश' के विषय में व्याख्यान दिया। दिनांक १० को, स्वामी जी महाराज 'पिटालिंग जाया' उपशाखा के कार्यक्रम में उपस्थित रहे। भजन-सत्र के अनन्तर सदस्यों के साथ स्वामी जी महाराज का प्रश्न-उत्तर कार्यक्रम था। दिनांक ११ को स्वामी जी महाराज ने प्राई उपशाखा की ओर प्रस्थान किया एवं 'दिवान दातो' अहमद बड़वाई हाल में श्रोताओं को, 'योगह्णह्णएक सार्वत्रिक विज्ञान' विषय पर सम्बोधन किया। प्रस्तुत कार्यक्रम दिव्य जीवन संघ की प्राई उपशाखा, सुंगाई करंगन उपशाखा, पेनांग उपशाखा और अलोर स्टार उपशाखा द्वारा संयुक्त उपक्रम निमित्त आयोजित किया गया था। अगले दिन, स्वामी जी महाराज ने दिव्य जीवन संघ की इपोह उपशाखा से भेंट कर, राज्य सेक्रेटरिएट हाल में एक जाहिर कार्यक्रम में उपस्थित रह कर 'आन्तरिक शान्ति' के विषय में भक्तों को सम्बोधित किये। स्वामी जी महाराज की मुलाकात का प्रमुख केन्द्र, आवाना जेन्टींग हाईलॅन्डस द्वारा 'ध्यान और योगह्णह्णउपचार के रूप में' विषयक परिचालित दो दिवसीय कार्यक्रम था।

स्वामी जी महाराज ने 'ध्यान', 'स्वस्थ तनाव-मुक्त जीवन-पद्धति', 'योग द्वारा विषाणुमुक्ति' तथा 'जीवन प्रति सर्वांगी और समग्रतया अभिगम' आदि विषयों पर परिचर्चा और विविध व्याख्यान दिये। स्वामी जी महाराज ने बाटुकेव्ज में 'साधना का महत्त्व' पर प्रवचन किया। अगले दिन, स्वामी जी महाराज केकेबी उपशाखा के कार्यक्रम में उपस्थित रहे तथा 'भगवद् गीता का नीति-रीति का शास्त्र' विषय पर व्याख्यान दिया। दिनांक १८ को, स्वामी जी महाराज ने दिव्य जीवन संघ की बाटुकेव्ज शाखा के शिवानन्द आश्रम में योग-छात्रों के साथ परिचर्चा की। स्वामी जी महाराज की यह मुलाकात अति सफल रही, क्योंकि सब कार्यक्रमों में भली-भाँति उपस्थिति थी।

दिनांक २० से दिनांक २१ पर्यन्त स्वामी जी महाराज सिंगापुर में रहे, कुछ मित्रों से मिले और आदरणीय श्री एच. आर. भोंसले जी द्वारा आयोजित सत्संग का उन्होंने परिचालन किया।

दिनांक २२ नवम्बर से दिनांक ३० नवम्बर की दिनावधि में स्वामी जी महाराज ने हांगकांग की मुलाकात ली एवं दिव्य जीवन संघ की हांगकांग शाखा (योग केन्द्र) द्वारा आयोजित कार्यक्रमों में उपस्थित रहे। स्वामी जी महाराज ने चेंग चाउ टापु पर आयोजित योग-शिविर में

उपस्थिति दी। स्वामी जी महाराज अध्ययन-मण्डली द्वारा (स्टडी ग्रुप द्वारा) विविध भक्तों के निवासस्थानों पर आयोजित सत्संग में उपस्थित रहे और उन्होंने 'भगवद् गीता तथा विवेक चूडामणि के उपदेशों' पर वक्तव्य दिये।

दिव्य जीवन संघ की हांग कांग शाखा ने परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज को, दिनांक २२ नवम्बर से दिनांक १ दिसम्बर २००९ की समयावधि में हांग कांग के निवासियोंक्को गुरुदेव की शिक्षाओं से ज्ञात करके, उनके प्रसार हेतु, आमन्त्रण दिया था।

दिनांक २३ नवम्बर को (७-८ः३० रात्रि में) पूज्य स्वामी जी महाराज ने मोंगकोक योग-केन्द्र में ९६ प्रतिभागियों की प्रतिभागिता में 'शरीर-विज्ञान तथा मनोविज्ञान में योग और स्वाध्याय' विषयक एक जाहिर प्रवचन दिया।

दिनांक २४ और २५ नवम्बर को (७-८ः३० रात्रि में) आदरणीय श्री स्वामी जी महाराज ने 'प्राणायाम-विज्ञान' के विषय पर अनुक्रमिक प्रवचन दिये। ये उभय प्रवचन योग-शिक्षक तालीम पाठ्यक्रम के अन्तर्निहित थे, जिनमें ५४ प्रतिभागी उपस्थित थे।

दिनांक २५ नवम्बर (८ः३० से ९ः०० रात्रि में) को पूज्य श्री स्वामी जी महाराज ने हांग कांग के केन्द्र द्वारा आयोजित 'योग-शिक्षक तालीम पाठ्यक्रम (आसन और प्राणायाम)' के प्रतिभागी तथा योगासन-प्राणायाम सिखाने में योग्यता-प्राप्त ऐसे १४ योग-शिक्षकों को प्रमाण-पत्र प्रदान किये।

दिनांक २६ नवम्बर को प्रभात में शाखा के समिति-सदस्यों, भक्तों तथा योग-साथियों सहित पूज्य श्री स्वामी जी महाराज ने विख्यात बौद्ध मन्दिर, ची मिन ननरी तथा समीप में ही कुवालून में डायमंड हिल पर स्थित नान-लियान गार्डन की मुलाकात लीं। इस पर्यटन में २८ प्रतिभागी थे।

शाखा ने दिनांक २७ से दिनांक २९ नवम्बर पर्यन्त एक योग-सेमिनार सम्पन्न किया। तीन दिवसीय इस सेमिनार की पूज्य श्री स्वामी जी महाराज ने स्व-उपस्थिति से शोभा में अभिवृद्धि की। सेमिनार में ७३ प्रतिभागी उपस्थित थे। सेमिनार का विषय था, 'भक्ति-योग'। परम पूज्य स्वामी जी महाराज के मार्गदर्शन में इस सेमिनार का प्रारम्भ प्रातः ५ः०० के समय से श्लोक-स्तोत्र पाठ तथा ध्यान से हो कर हठयोग-सत्र में परिणत होता था। इन सुप्रिय गतिविधियों के अतिरिक्त पूज्य श्री स्वामी जी महाराज ने इन तीन दिनों की अवधि में शृंखलाबद्ध प्रवचन दिये। (ये चार प्रवचन योग- शिक्षकों के उम्मीदवारों की उपस्थिति में 'योग-शिक्षक तालीम कोर्स' के अन्तर्गत थे।) सब प्रतिभागियों ने पूज्य श्री स्वामी जी महाराज के आभार मान कर इच्छा व्यक्त की कि पुनः योग-ज्ञान-दान हेतु वे शीघ्र ही पधारें।

दिनांक ३० नवम्बर को प्रभात में शाखा-समिति के सदस्यों, भक्तों तथा योग-साथियों के संग में हांग कांग वेट्लैन्डपार्क की (न्यू टेरिटोरीज़ में टिन शुई वाई में स्थित विश्व-श्रेणी की पर्यावरण यात्रा-सुविधा) तथा फुंग यींग सीन कून (न्यू टेरीटरीज़ में, फॅनलिंग-स्थित एक सुप्रसिद्ध ताओ मन्दिर) की, २३ प्रतिभागियों सहित मुलाकात ली।

दिनांक ३० नवम्बर (७-८ः३० रात्रि में) पूज्य श्री स्वामी जी महाराज ने ४५ प्रतिभागियों की उपस्थिति में कॅसल पीक रोड योग केन्द्र में 'योग तथा योग-शिक्षण हेतु प्रायोगिक मार्गदर्शिका' विषयक प्रवचन भी दिया। स्वामी जी महाराज दिनांक ३ दिसम्बर, २००९ को मुख्यालय में पहुँचे।

* * *

दिव्य जीवन संघ की शाखाओं के प्रतिवेदन

अहमदाबाद, उस्मानपुरा (गुजरात): नवम्बर २००९ की माहावधि में शाखा ने निज योगासन-वर्गों का सातत्य रखा।

अम्बाला (हरियाणा): शाखा द्वारा दैनिक सत्संग, दिनांक ८ नवम्बर को वीडिओ-सत्संग तथा महिलाओं के लिए दैनिक योगासन-वर्ग सम्पन्न किये गये। दो होमियोपैथिक औषधालयों द्वारा सेवा चलती रही।

बड़कुँआल (उड़ीसा): शाखा ने प्रभात में दैनिक द्विवार पूजाएँ, स्तोत्र-पाठ, भजन-कीर्तन एवं अपराह्न में श्रीमद् भागवतम् पर प्रवचन परिचालित किये। प्रति गुरुवार और शिवानन्द-दिन को पादुका-पूजा की गयी। शाखा द्वारा भक्तों के निवास-स्थानों पर पादुका-पूजा सहित दो चल-सत्संग सम्पन्न हुए।

बरगढ़ (उड़ीसा): शाखा की नियमित गतिविधियाँ—दैनिक रूप से द्विवार पूजाएँ, दैनिक २ घण्टों का स्वाध्याय, ध्यान आदि सहित सान्ध्य-सत्र, साप्ताहिक सत्संग प्रति शनिवार को, प्रति गुरुवार को पादुका-पूजा तथा प्रति रविवार को श्रीमद् भगवद् गीता पारायण चक्र। होमियोपैथिक औषधालय प्रति माह लगभग २०० मरीजों के इलाज करता है।

बल्लारि (कर्नाटक): शाखा ने दैनिक पूजा और प्रति रविवार को पादुका-पूजा और सत्संग परिचालित किये।

भावनगर (गुजरात): नियमित गतिविधियाँ—प्रति गुरुवार, शनिवार, रविवार को सत्संग; शिवानन्द-दिन, चिदानन्द-दिन को पादुका-पूजा; हर माह की पुण्यतिथि—दिनांक २८ को संकीर्तन; प्रति माह परिवार के निवास-स्थानों पर मृतात्माओं की शान्ति के लिए प्रार्थनाएँ (हर माह लगभग ५० बार); दैनिक योगासन-वर्ग; दैनिक होमियोपैथिक औषधालय; दो केन्द्रों पर एक्युप्रेशर उपचार, कुष्ठरोगियों की दो संस्थाओं में वास करने वाले ९५ परिवारों को कोरे राशन का वितरण; कुष्ठरोगियों के अस्पताल में भोज्य पदार्थों का वितरण तथा मरीजों को मलपात्रों, जल-शैयाओं, वॉकरों का प्रदान। विशेष गतिविधियाँ—(१) प्रथम पुण्यतिथि : २१ स्कूलों के कुल मिला कर १२६ प्रतिभागियों की प्रार्थना-सभा। उन्हें ज्ञान-प्रसाद का वितरण। कुष्ठरोगियों की संस्थाओं के ९५ परिवारों को मिठाइयाँ और कोरे राशन का प्रदान। (२) तीन दिवसीय श्रीसूक्त विषयक प्रवचन। (३) महारास पूर्णिमा : श्री सत्यनारायण कथा। (४) दीपावली : कुष्ठरोगियों की संस्था तथा अस्पताल में मिठाइयों का वितरण। (५) नूतन वर्ष : शिवानन्द आश्रम में गुजरात के नूतन वार्षिक दिन को स्नेह-मिलन। (६) 'आध्यात्मिक आश्रम की आवश्यकता' विषयक आध्यात्मिक प्रवचन। (७) दिनांक ८ नवम्बर को ११ कुंडी गायत्री-यज्ञ। (८) दिनांक २८-२९-३० नवम्बर को भगवद् गीता पर प्रवचन। (९) कुष्ठरोग के २३ मरीजों को सोमनाथ तथा अन्य धार्मिक स्थलों की यात्रा। (१०) ४५० विद्वानों तथा सुशिक्षितों की उपस्थिति में ४ एन. जी. संस्थाओं को उनकी उल्लेखनीय सेवाओं हेतु एक विशेष जाहिर उत्सव।

भिलाई (छत्तीसगढ़): शाखा ने दिनांक ४ अक्तूबर और ८ नवम्बर को पादुका-पूजा सहित मासिक सत्संग; प्रति मंगलवार, शुक्रवार और एकादशी को श्री हनुमान चालीसा, श्री ललिता सहस्रनाम, श्री विष्णु सहस्रनाम और श्रीमद् भगवद् गीता के पाठ सम्पन्न किये।

भोंगीर (आन्ध्र प्रदेश): शाखा के दैनिक सान्ध्य-सत्संग में श्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र-पारायण समाविष्ट थे।

ब्रह्मपुर, चिदानन्द विहार (उड़ीसा): नियमित गतिविधियाँ—साप्ताहिक सत्संग, चल-सत्संग, प्रति गुरुवार को, प्रति माह के दिनांक ८ और २४ को पादुका-पूजा, एकादशी की उभय तिथियों को गीता-पारायण, संक्रान्ति-दिन को श्री सुन्दरकाण्ड पारायण, प्रति माह के तृतीय रविवार को साधना-दिन। विशेष गतिविधियाँ—(१) कार्तिकी पूर्णिमा : महामन्त्र का अखण्ड कीर्तन १२ घण्टों का और पादुका-पूजा। (२) श्रीमद् भगवद् गीता जयन्ती : प्रत्येक श्लोक-पठन के साथ आहुति युक्त यज्ञ, प्रसाद-सेवन।

ब्रह्मपुर, लांजीपल्ली (उड़ीसा): शाखा ने प्रति शनिवार और संक्रान्ति दिन को सत्संग किये तथा मासिक साधना-दिन और प्रति माह के अन्तिम रविवार को नारायण-सेवा सम्पन्न की।

छत्रपुर (उड़ीसा): शाखा ने दैनिक सत्संग के अतिरिक्त साप्ताहिक सत्संग, दो चल-सत्संग, दिनांक ८ तथा २४ अक्तूबर को पादुका-पूजा तथा संक्रान्ति-दिन को श्री सुन्दरकाण्ड पारायण किये। शाखा ने एक माहभर श्री रामचरित मानस का पारायण किया जिसके समापन में आदरणीय श्री स्वामी अर्पणानन्द जी ने भक्तों को सम्बोधन किया। दिनांक २९ अक्तूबर को दो संन्यासियों की शाखा की मुलाकात निमित्त विशेष सत्संग आयोजित हुए।

चेन्नै, अन्ना नगर (तमिल नाडु): दिनांक २९ नवम्बर को शाखा का मासिक सत्संग सम्पन्न हुआ।

फरीदपुर (उत्तर प्रदेश): शाखा द्वारा दैनिक पूजा और समूह प्रार्थना, वर्षभर एक माह पर्यन्त श्री रामचरित मानस का पारायण जिसकी पूर्णाहुति प्रति माह पौर्णिमा को हवन द्वारा होती है, स्वाध्याय तथा ध्यान के साथ साप्ताहिक सत्संग और प्रति माह द्वितीय बुधवार को रामायण पर प्रवचन पूर्ण किये जाते हैं।

घाटपदमुर, जगदालपुर (छत्तीसगढ़): शाखा ने प्रभात में दैनिक पूजा, प्रार्थना-ध्यान, स्तोत्र-पाठ तथा योगासन और सन्ध्या को अर्ध घण्टे के संकीर्तन पश्चात् सत्संग परिचालित किये। प्रति गुरुवार पादुका-पूजा; प्रति रविवार को श्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र का पारायण; प्रति शनिवार को श्री सुन्दरकाण्ड पारायण और दीपावली को विशेष पूजा, संकीर्तन, जप, दीपशोभा आदि सम्पन्न किये।

गुमरगुण्डा (छत्तीसगढ़): दैनिक गतिविधियाँ‌ह्लह्लत्रिवार पूजाएँ; प्रातः ध्यान-प्रार्थना; योगासन और सान्ध्य-सत्संग। प्रति गुरुवार को पादुका-पूजा, प्रति शनिवार को श्री सुन्दरकाण्ड पारायण और अन्य दिनों को सम्बन्धित देव-देवी के स्तोत्र-पाठ। दीपावली को दीपोंयुक्त आश्रम का शृंगार और विशेष पूजा आदि सम्पन्न किये गये।

जयपुर, मालवीय नगर (राजस्थान): दैनिक रूप से योगासन और एक घण्टे के ध्यान सत्र के अतिरिक्त, प्रभात में एक घण्टे का ध्यान और सायंकाल में स्वाध्याय के आधिक्य में शाखा ने प्रति रविवार को सत्संग और हवन, मातृ-सत्संग, नारायण-सेवा और मरीजों को होमियोपैथिक औषधालय द्वारा सतत निःशुल्क उपचार किये।

जयपुर (उड़ीसा): द्विवार दैनिक पूजाएँ, साप्ताहिक सत्संग, साप्ताहिक चल-सत्संग के आधिक्य में शाखा ने हवन, स्वाध्याय, पूजा और प्रसाद-सेवन के साथ शिवानन्द-दिन; ५० भक्तों की प्रतिभागिता के मध्य, परम पूज्य श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज के जीवन तथा उनकी शिक्षाओं पर प्रवचन, स्वाध्याय, उनकी पुस्तक में से चयनित भाग का पठन, पूजा, आरती सहित, परम पूज्य श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज की पुण्यतिथि के कार्यक्रम सम्पन्न किये गये।

काकिनाडा (आन्ध्र प्रदेश): शाखा के रविवारीय सत्संगों में द्वितीय रविवार को कुण्डलिनी और ध्यान पर एक प्रवचन और चतुर्थ रविवार को दो प्रवचन आयोजित हुए।

कंटाबाँझी (उड़ीसा): शाखा ने प्रति रविवार भगवद् गीता के स्वाध्याय सहित सत्संग सम्पन्न किये। श्रीमद् भगवद् गीता जयन्ती के विशेष कार्यक्रम में पूजा, भगवद् गीता पारायण, आरती, होम, प्रसाद-सेवन तथा सन्ध्या में पूजा, कीर्तन, आरती, प्रसाद-सेवन सम्पन्न हुए।

खातिगुडा (उड़ीसा): नियमित गतिविधियाँ‌ह्लह्लसाप्ताहिक सत्संग; श्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र-पारायण सहित एकादशी-सत्संग, १२ घण्टों के महामन्त्र के अखण्ड कीर्तन और नारायण-सेवा सहित मासिक साधना-दिन। सितम्बर माह की विशेष गतिविधियाँ‌ह्लह्ल(१) शिवानन्द जयन्ती : प्रातः प्रार्थना-ध्यान, नगर-कीर्तन, भण्डारा, विशेष रात्रि-सत्संग। (२) नवरात्रि पूजा : दैनिक पूजा-अर्चना, श्री दुर्गा सप्तशती और 'God As Mother' इन पुस्तकों के स्वाध्याय सहित रात्रि-सत्संग तथा विजयादशी को उत्सव।

खुर्जा (उत्तर प्रदेश): शाखा के प्रति रविवार के सत्संगों में स्वाध्याय और संकीर्तन समाविष्ट थे; हर एकादशी को मातृ-सत्संग; प्रति रविवार को प्रभात में ध्यान, प्रभात में भाइयों हेतु और सायंकाल में महिलाओं के लिए योगासन-वर्ग; होमियोपैथिक औषधालय ने दैनिक रूप से मरीजों के उपचार किये।

कौकोंडा (छत्तीसगढ़) : शाखा द्वारा दैनिक संकीर्तन, परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की प्रथम पुण्यतिथि पर पादुका-पूजा और शाखा के पूर्व अध्यक्ष जी की प्रथम पुण्यतिथि

पर विशेष प्रार्थना-सभा और भण्डारा; तथा नवरात्रि के दौरान दैनिक पूजा-अर्चना और एक भण्डारा आदि आयोजित हुए।

मदुरै (तमिल नाडु): शिवानन्द स्टडी सर्कल, तिरुनगर ३० वर्षों से अधिक समय से रविवारीय अध्ययन वर्ग परिचालित करता है। शाखा के, ३१ वें वार्षिक दिन को दिनांक १४ नवम्बर से दिनांक १९ नवम्बर पर्यन्त ९ सत्रों में, विविध स्थानों पर ९ विद्वानों के प्रवचन आयोजित किये गये।

नन्दिनी नगर (छत्तीसगढ़): शाखा के दैनिक प्रार्थना-स्तोत्र-पाठ के २ घण्टे के ब्राह्ममुहूर्तीय सत्र तथा सान्ध्य-सत्संग के आधिक्य में, शाखा ने साप्ताहिक चल-सत्संग, सुन्दरकाण्ड-पारायणयुक्त शनिवार के मातृ-सत्संग, श्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र और श्रीमद् भगवद् गीता पारायणयुक्त एकादशी के मातृ-सत्संग और प्रति माह दिनांक ३ को ६ घण्टों का महामन्त्र का अखण्ड कीर्तन भी सम्पन्न किये। दिनांक १४ और १९ अक्तूबर को आयोजित हवन विशेष गतिविधियाँ थी।

फुलबानी (उड़ीसा): दैनिक और नियमित गतिविधियाँ ह्नह्नदैनिक द्विवार पूजाएँ, साप्ताहिक सत्संग और चल-सत्संग, शिवानन्द-दिन तथा चिदानन्द-दिन को पादुका-पूजा। विशेष गतिविधियाँह्नह्न(१) आदरणीय बाबा श्री किशोरी चरणदास जी द्वारा श्रीमद् भागवतम् पर प्रवचन। (२) कार्तिक महीने में शुक्ल पक्ष में १५ दिनों पर्यन्त प्रो. हुदानन्द रे जी द्वारा भी भागवत-प्रवचन।

रायपुर (छत्तीसगढ़) : शाखा द्वारा साप्ताहिक सत्संग तथा प्रति एकादशी को पूजा श्री विष्णु सहस्रनाम पारायण आदि परिचालित हुए। श्रीमद् भगवद् गीता जयन्ती के कार्यक्रम में, तीन सत्रों में, ११ घण्टों से भी अधिक समयावधि में, ब्राह्ममुहूर्तीय ध्यान, गीता-पारायण, सत्संग, आदरणीय श्री स्वामी रामयोगी जी का प्रवचन एवं एकादशी-कार्यक्रम का सान्ध्य-सत्र आदि समाविष्ट थे।

राउरकेला, शिवानन्द आश्रम (उड़ीसा): दैनिक और नियमित गतिविधियाँह्नह्नब्राह्ममुहूर्तीय ध्यान-प्रार्थना और योगासन-वर्ग; प्रति गुरुवार को प्रभात में पादुका-पूजा तथा साप्ताहिक सान्ध्य-सत्संग; साप्ताहिक चल-सत्संग; शिवानन्द-दिन को पादुका-पूजा; चिदानन्द-दिन को प्रभात में पादुका-पूजा और विशेष सान्ध्य-सत्संग तथा होमियोपैथिक औषधालय। विशेष गतिविधियाँह्नह्न(१) श्रीमद् भगवद् गीता जयन्ती : पादुका-पूजा, गीता के प्रति श्लोक आहुति युक्त हवन, प्रसाद-सेवन और कल्पतरु आश्रम-निवासियों को अन्नदान। (२) स्थापना-दिन : दसवें प्रतिष्ठा-दिन के वार्षिक समारोह में प्रभातफेरी, पादुका-पूजा, श्री विष्णु सहस्रनाम तथा गीता-पारायण, लिखित मन्त्र-जप-सत्र, प्रसाद-सेवन, नारायण-सेवा तथा सान्ध्य-सत्संग। (३) परम पूज्य श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज की पुण्यतिथि : पादुका-पूजा, गीता-पारायण तथा सान्ध्य-सत्संग।

राउरकेला, स्टील टाउनशिप (उड़ीसा): शाखा ने साप्ताहिक चल-सत्संग और गीता-जयन्ती को विशेष कार्यक्रम सम्पन्न किये।

सालेपुर (उड़ीसा): नियमित गतिविधियाँह्नह्नद्विवार पूजाएँ, दैनिक ब्राह्ममुहूर्तीय प्रार्थना-ध्यान सभा; १ घण्टा कीर्तन, १ घण्टा जप-स्तोत्रपाठ; दैनिक सान्ध्यह्नह्न१ घण्टे का अध्ययन-कक्ष, स्तोत्रपाठ, ध्यान, स्वाध्याय; साप्ताहिक सत्संग; प्रति सोमवार को श्री शिवसहस्रनामावली का पाठ; दिनांक ३ अक्तूबर को श्री सुन्दरकाण्ड का और दिनांक ४ को गीता का पारायण; शिवानन्द-दिन को पादुका-पूजा, 'ॐ नमो भगवते शिवानन्दाय' मन्त्र का १ घण्टा जप, 'साधना' पुस्तक का स्वाध्याय तथा सान्ध्य-सत्संग; मासिक साधना-दिन तथा स्वामी शिवानन्द चैरिटेबल अस्पताल में, अक्तूबर माह में ३३० मरीजों के इलाज। विशेष गतिविधियाँह्नह्न(१) दिनांक २५ अक्तूबर को १२ घण्टों का महामन्त्र का अखण्ड जप। (२) प्रति सोमवार को, ५०८ प्रतिभागियों को एक स्थानिक कॉलेज में योगासन तालीम।

साउथ बलण्डा (उड़ीसा): शाखा ने द्विवार पूजाएँ, साप्ताहिक सत्संग, शिवानन्द-दिन चिदानन्द-दिन को विशेष सत्संग, पादुका-पूजा, संक्रान्ति-दिन को ३ घण्टों का अखण्ड महामृत्युंजय-मन्त्र-जप और ३ घण्टों का महामन्त्र का अखण्ड कीर्तन। श्रीमद् भागवत कथामृत का सप्ताह और २ नवम्बर को उसका समापन-कार्यक्रम भी सम्पन्न किये गये।

सुनाबेडा (उड़ीसा): शाखा ने स्वाध्याय सहित साप्ताहिक द्विवार सत्संग परिचालित करने के अतिरिक्त कार्तिक पूर्णिमा को पादुका-पूजा, महामन्त्र का १२ घण्टों का अखण्ड कीर्तन, नगर-संकीर्तन और प्रसाद-सेवन आदि सम्पन्न किये। श्रीमद् भगवद् गीता जयन्ती के प्रमुख कार्यक्रमों में पादुका-पूजा, हवन और गीता-पारायण समाविष्ट थे। दिनांक ४ अक्तूबर को अनेक भक्तों का मन्त्र-दीक्षा दिन होने से शाखा ने प्रार्थना-ध्यान की ब्राह्ममुहूर्तीय सभा एवं हवन आयोजित किये।

सुरेन्द्र नगर (गुजरात): शाखा ने प्रति शनिवार को श्री सुन्दरकाण्ड पारायण और प्रति रविवार को आध्यात्मिक प्रवचन सम्पन्न किये। परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज ने 'At the Feet of the Master' का गुजराती अनुवाद तथा 'What is Divine Life' और 'Prathana and Stotras' जो कि शाखा द्वारा प्रकाशित हुए थे, उनका विमोचन किया। आदरणीय श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी ने प्रभात में एक और सायंकाल में दूसरे स्थान पर इस प्रकार योगासन-वर्ग तथा १९ ग्राम/शहरों में निज जाहिर प्रवचन/सत्संग सम्पन्न किये। उनकी यात्रावधि में ६ नूतन शाखाएँ और सत्संग-केन्द्र आरम्भित किये गये। शाखा ने श्रीमद् भागवतम्, श्री रामचरित मानस और श्रीमद् भगवद् गीता के ३४६ सेट वितरित किये।

बिक्रमपुर (उड़ीसा): पावन कार्तिक माहावधि में शाखा ने श्रीमद् भागवतम् का संस्कृत मूल पारायण प्रभात में और उड़िया भाषा में प्रवचन सायंकाल में, ५ बार पूजा-आरती, शृंगार, भोग आदि आयोजित किये। समापन के दिन कार्यक्रमों में गीता-पारायण और श्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र पारायण, हवन तथा प्रसाद-सेवन समाविष्ट थे।

विशेष गतिविधि

राजकोट में आध्यात्मिक परिषद्

दिव्य जीवन संघ की राजकोट तथा वीरनगर शाखाओं ने तथा शिवानन्द मिशन, वीरनगर ने संयुक्त रूप से दिनांक ३०, ३१ अक्तूबर और दिनांक १ नवम्बर को राजकोट में एक आध्यात्मिक परिषद् आयोजित की। गुजरात की दिव्य जीवन संघ की शाखाओं के ५३० प्रतिनिधि और उड़ीसा तथा झारखण्ड के २० प्रतिनिधि उसमें सम्मिलित हुए। आदरणीय श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी ने राजकोट में एक सप्ताह पूर्व पहुँच कर योगासन-वर्ग परिचालित किये।

परम पावन श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज, परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज, आदरणीय श्री स्वामी त्यागवैराग्यानन्द जी, ३ अन्य स्वामी जी, प्रोफेसर रणदेव जी और अन्य दो सुप्रसिद्ध विद्वानों ने अमूल्य आध्यात्मिक प्रवचन तथा मार्गदर्शन दिये। प्रश्नोत्तर-सत्र में परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज ने प्रश्नकर्ताओं की शंकाओं को निर्मूल करते हुए साधकों को मार्गदर्शन दिया। परिषद् एक महान् सफलता थी।

SPECIAL ANNOUNCEMENT

With effect from 28.09.2009, Vijaya Dasami Day, the Rates of Audio CDs, Audio CDs (Twin), Video CDs and DVDs are revised as under.

1. Audio CDs	Rs. 50/- each
2. Audio CDs (Twin)	Rs. 90/- each
3. Video CDs	Rs. 60/- each
4. Video CDs (Twin)	Rs. 110/- each
5. DVDs	Rs. 60/- each

—The Divine Life Society

फिलर

साधक और गुरुह्लह्लदोनों को साथ-साथ पिता और पुत्र के समान प्रेम से रहना चाहिए। उनका प्रेम घनिष्ट और पवित्र होना चाहिए। गुरु प्रेम और स्नेह के साथ साधक का परिपालन करे तथा साधक आदर, भक्ति और श्रद्धा के साथ गुरु के साथ रह कर साधना करे। साधक की प्रतिभा इतनी प्रखर और ग्राहक होनी चाहिए कि गुरु का एक बार का उपदेश उसके रोम-रोम में रम जाना चाहिए। इसके लिए, गुरु के आदेश के लिए, सदा प्रतीक्षा करनी चाहिए। गुरु के आदेशों को पाने के लिए सच्चे दिल से उत्कण्ठित रहना चाहिए। यदि ऐसा हो गया, तो साधक अमित लाभ का भागी हो सकता है। अन्यथा अविरत साधना करते रहने पर भी ढाक के तीन पात रहेंगे, साधक के आसुरिक भाव जैसे-के-तैसे ही रहेंगे, वह तिल-भर भी आगे नहीं बढ़ सकेगा।

ह्लह्लस्वामी शिवानन्द